8000 जैन साधुओं के नरसंहार का इतिहास

- Anubhav Jain

किसी भी प्रकार की अप्रमाणित जानकारी को इसमें नहीं जोड़ा गया है, इसकी प्रामाणिकता का आधार पण्डित कैलाशचंद्र सिद्धांताचार्य द्वारा लिखी हुई "दक्षिण भारत में जैन धर्म" पुस्तक है, साथ ही साथ अन्य पुस्तकों, लेखों, internet data आदि का उपयोग भी इसमें किया गया है।

- अनुभव जैन, खनियाँधाना

Sambandar (Wooden Image), ASI Museum, Vellore

The Child Saint Sambandar, chola bronze, 12th century India, Freer Gallery of Art, Washington DC

सम्बन्दर और उसका कार्य

तंजौर जिले के शियाली ग्राम में एक ब्राह्मण पुरोहित के घर में सम्बन्दर का जन्म हुआ था। तीन वर्ष की अवस्था से ही वह शिव की भक्ति में भजन गाया करता था। वेद वेदांगों में पारंगत और तमिल का भी यह अद्वितीय विद्वान था। उसे ब्राह्मणत्व का बडा अभिमान था। **उसके जीवन का एक प्रधान उद्देश्य जैन धर्म और बौद्ध धर्म-जैसे नास्तिक धर्म को दबाना था।** अपने भक्तों और प्रशंसकों के बडे समूह के साथ वह तमिल देश में भ्रमण करता रहता था और शैव धर्म के लिए जनता में असीम उत्साह पैदा करता था।

सम्बन्दर और उसका कार्य

उसके उत्तेजक गीतों का प्रत्येक दसवाँ पद्य जैनों के लिए अभिशाप कारक होता है। यहाँ हम उसके जीवन के विविध प्रयोगों को न देकर उन कार्यकलापों को बतलाना चाहते हैं **जिनके कारण मदुरा प्रदेश में इतनी दृढता के साथ फैला हुआ जैन धर्म वहाँ से निर्वासित हो गया।**

सम्बन्दर और उसका कार्य

उस समय पाण्ड्य राज्य का शासक **सुन्दर पाण्डय/ कून पाण्डय/ अरिकेसरी/ नेदुमरन** था, जो पक्का जैन था। उसकी पत्नी चोल राजा की कन्या थी और वह शिव की भक्त थी। पाण्ड्य नरेश- का मंत्री कुलच्चरइ भी, जिसने अपने समय के धार्मिक इतिहास में प्रमुख भाग लिया, शिव भक्त था। इन दोनों ने राजा सुन्दर पाण्डय को अपने धर्म में दीक्षित करके उस देश में शैव धर्म की स्थापना करने के विचार से सम्बन्दर को मदुरा में लाने का प्रबन्ध किया। सम्वन्दर ने तत्काल निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। सम्बन्दर का मदुरा में पदार्पण जिस उद्देश्य से और जिस स्थिति में हुआ वह सब ऐतिहासिक तथ्य के रूप में माना जाता है।

सुन्दर पाण्डय का बीमार हो जाना -

पेरियपुराणम् के अनुसार जिस मकान में सम्बन्दर अपने ब्राह्मण भक्तों के साथ ठहरा हुआ था उसमे जैनों ने आग लगाने की योजना बनायी लेकिन योजना प्रकट हो गयी और ख़तरा टल गया। राजा अचानक बीमार भी हो गया। और जब उसके जैन सलाहकारो से उसे नीरोग करने के लिए कहा गया तो वे राजा को स्वस्थ नहीं कर सके। तो रानी और मन्त्री ने सम्बन्दर की चिकित्सा कराने के लिए राजा से प्रार्थना की। सम्बन्दर की प्रार्थना से राजा स्वस्थ हो गया। चतुर सम्बन्दर ने इस घटनासे पूरा लाभ उठाने के लिए जैन मंत्र और जैनधर्म को निरर्थक बताया।

अपने अपने धर्म की सत्यता प्रगट करने का आदेश -

फलस्वरूप राजा ने जैन को अपने धर्म सत्यता प्रमाणितकरने की आज्ञा दी। परस्पर की स्वीकृति से अपने- अपने धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए दो परीक्षाएं निर्धारित की गयी।

दो प्रकार की परीक्षा और शैव मत की जीत

प्रथम परीक्षा

प्रथम, जैनों की एक धर्म-पुस्तक और सम्बन्दर की एक प्रार्थना से अंकित एक पत्ती आग में डाल दी गयी। जैनों की धर्म पुस्तक तो जलकर राख हो गयी, किन्तु पत्ती लपटो में पडकर जलने के बदले और भी अधिक चमकने लगी।

द्वितीय परीक्षा

दूसरी परीक्षा के लिए उक्त दोनो वस्तुएँ वेगी के तीक्ष्ण प्रवाह मे फेंक दो गयी । पत्ती प्रवाह के विरुद्ध तैरने लगी किन्तु जैनों की पुस्तक जल में डूब गयी।

हज़ारों जैन अपने जीवन से वंचित कर दिए गए -

यह जैनों के लिए जबरदस्त धक्का था। इसके बाद से जैन राजा के केवल विश्वास से ही वंचित नहीं हो गये किन्तु **हजारों जैन अपने जीवन से भी वचित कर दिये गये**। इस काल्पनिक अतिशयोक्तिपूर्ण विवरण में सम्बन्दर की ऐतिहासिकता निस्सन्देह है। उसी ने मदुरा के राजा को जैन धर्म से शैव धर्म में दीक्षित किया और यह जैनों के लिए संघातक हुआ।

IMPALEMENT OF EIGHT THOUSAND JAINS IN MADURAI

FIRE DEBATE BETWEEN SAMMANDHAR AND JAINS

CONVERSION OF JAINS AT THE POINT OF SWORD

Though historians differ about the version of impalement of 8000 Jains in Madurai, there is ample proof that this impalement took place in Madurai. *'Sama Natham'* a corrupt version of *'Samnar Rattham'* or 'blood of Jains' is situated about six kilometers away from Madurai and a winding path among acacia bushes and thorns lead to a place worshipped as Mayandi temple. The place is isolated and is located in an eerie environment, but for the 10 foot trident and stone pillars with a hanging bell, there is nothing to suggest that it is a temple.

The villagers and the local boys are acquainted with the history of the place. They describe the place as "Samanar Rattham" or blood of Jains where Jains were persecuted enmasse after having been defeated in the fire and water debate with *Thirunavukarasar*. The place where the pogrom by impalement took place is called as *Samanar Medu in Samanatham*.

IMPALEMENT SCENE DESCRIBED IN AVUDAIYAR TEMPLE ROOF PAINTING

The events recorded in the narrative of Sammandhar are displayed in the five of the twelve festivals in Madurai Meenatchi Amman temple. On these occasions,which are known as impaling festival an image symbolising a Jain impaled on a stake is carried in procession .According to a tradition the villages of *Mela Kilavu* and *Kil Kilavu* near Sholavandan are so named because the stakes (*Kilavu*) for impalement extended so far from the City of Madurai.(*48*) Edgar Thurston had also suggested the reading of A.Guerinot's *'Essai de Bibliographie Jaina'* , at *Annales du Musee Guimet* , in Paris .

Today Scholars are shocked to learn that the frescoes on the wall of the Mandapam of Meenatchi Amman temple golden lotus tank illustrating the persecution of Jains are whitewashed by the temple authorities completely vandalising the important pieces of history (49). Now some efforts are being made to restore the paintings.

समनाथं / समानाथं -

भारत के तमिलनाडु राज्य के मदुरै ज़िले के एक पंचायत गाँव का का नाम है। यह गाँव 7 वीं शताब्दी में तमिल में जैन दिगम्बर साधुओं का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। इसी स्थान पर राजा सुंदर पाण्ड्य ने 8000 निर्दोष जैन साधुओं की हत्या करवायी थी। यह वही स्थान है जहां पर विश्व का सबसे प्राचीन और सबसे बड़ा एवं भयंकर नरसंहार हुआ था। यह वही स्थान है जहाँ पर अत्यंत क्रूरता पूर्वक जैन साधुओं का नर संहार किया गया था। इतिहास में इस तरह के नरसंहार को सबसे अधिक भयानक नरसंहार की श्रेणी में रखा जाता है।

IMPALEMENT - एक विशेष प्रकार का दंड

राजा सुंदर पाण्ड्य ने जैन मुनियों/भिक्षुओं को बैठने की मुद्रा में तेज, लम्बी, शंक्वाकार संरचनाओं पर बलपूर्वक बिठा दिया। उनके शरीर को उन शंक्वाकार संरचनाओं द्वारा छेद दिया गया था, उन्हें उबले हुए तेल के बड़े कंटेनर में धकेल दिया गया था और फिर उनके शवों को जानवरों और गिद्धों को खिलाया गया था।

IMPALEMENT - नरसंहार

20 एकड़ भूमि में इन हत्या किए गए जैनों (साधुओं) की राख

स्थानीय लोगों का कहना है कि लगभग 20 एकड़ भूमि में इन हत्या किए गए जैनों (साधुओं) की राख फैली हुई थी। Sama Natham का मूल नाम **Samnar Rattham** था जिसका अपभ्रंश होते होते Sama Natham हो गया। Samnar Rattham का अर्थ होता है **जैनों का खून**। यह स्थान मदुरै से 6 Km दूर है और एकांत में होने से भयावह वातावरण से युक्त है। Sama Natham के जिस स्थान पर यह नरसंहार हुआ था उस स्थान को Samanar Medu के नाम से जाना जाता है।

Samanatham - Shrman (Jains) + Raktam (Blood)

that-is-Jains-Blood-Place-where-worlds-oldest-and-biggest-human-Massacre-happened

Samanatham - Shrman (Jains) + Raktam (Blood)

that-is-Jains-Blood-Place-where-worlds-oldest-and-biggest-human-Massacre-happened

Impaling of Jains

Though the number of Jain people who were persecuted is questionable, the incitance of persecution is not in doubt.

http://www.brainkart.com/article/Pandyas_33622/

मीनाक्षी अम्मन मंदिर -

मदुरै के मीनाक्षी अम्मन मंदिर की दीवालों पर नरसंहार के चित्र बने हुए हैं। 12 प्रकार के त्यौहारों में से पाँच त्यौहार जैन साधुओं पर किए गए नरसंहार के उपलक्ष्य में भी आज तक वहाँ पर मनाए जाते हैं। मंदिर के अधिकारियों द्वारा अनेकों बार उन सभी चित्रों को मिटाने का प्रयास किया गया है, किंतु कुछ प्रयासों द्वारा वे अभी सुरक्षित किए गए हैं।

अवुदैयर मंदिर की दीवालों पर प्राप्त भित्तिचित्र जिसमें जैन साधुओं के नरसंहार का वर्णन है।

धर्म परिवर्तन, दलित बनाना, और नरसंहार -

नरसंहार के सम्बंध में दो प्रकार के उल्लेख प्राप्त होते हैं। एक उल्लेख के अनुसार राजा ने संत संबंदर के कहने पर 8000 जैन साधुओं की हत्या का आदेश दिया था, और दूसरे उल्लेख के अनुसार जैन साधुओं ने स्वयं ही अपने प्राण समर्पित कर दिए थे। घटना जैसी भी रही हो, किंतु सत्य अवश्य है। उस समय कुछ जैनियों ने तो संत संबंदर और राजा के दबाव में आकर शैव धर्म को धारण कर लिया, हज़ारों जैनियों को दलित बना दिया गया और हज़ारों जैनों का तो नरसंहार ही कर दिया था।

जैनियों को निर्दयता पूर्वक सताया गया-

जिन जैनियों ने शैव बनने से माना किया उन्हें या तो देश से निकाल दिया गया अथवा उनका नरसंहार कर दिया गया। इस तरह सातवीं और आठवीं शताब्दी में जैन धर्म और जैनियों को निर्दयता पूर्वक सताया गया।

कुछ स्रोत -

- Sambandar
- Impalement_of_the_Jains_in_Madurai
- www.jainworld.com
- Open Boundaries: Jain Communities and Cultures in Indian History
- http://www.brainkart.com/article/Pandyas_33622/
- that-is-Jains-Blood-Place-where-worlds-oldest-and-biggest-human-Massacre-happened

Anubhav Jain

- ➤ anubhavjainaman@gmail.com
- ➤ +91 9754555204
- ➤ youtube.com/channel/UCrRNOoyt280-nfdRtrtrnuw
- ➤ hi.quora.com/profile/Anubhav-Shastri
- ➤ shastrianubhav.home.blog
- ➤ https://twitter.com/Anubhavshastri?s=09